मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन तिथि प्रत्येक महीने की १९ तारीख • सलंग अंक १७१ • अक्टूबर-२०२१

जलझीलनी एकादशी

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

अहमदाबाद मंदिर में पर्व के निमित्त २०० घंटे की अखंड धून की
शुरुआत करते प.पू. बड़े महाराजश्री और पूर्णाहुति करते प.पू. लालजी महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम में पर्व के निमित्त प.पू. बड़े महाराजश्री
तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में अखंड धून।

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा में पर्व निमित्त अखंड धून।

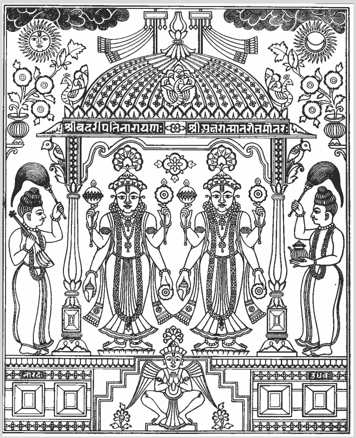

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १७१ ● अक्टूबर-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. साबरमती ०६

०४. पर्व के साथ साथ ०९

०५. अडालज १०

०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १२

०७. भक्ति सुधा १७

०८. सत्संग समाचार १९

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

सत्य शास्त्रो में नवधा भक्ति के साधन द्वारा प्राप्त साध्य भक्ति शरणागति भक्ति से खुश होकर परम ब्रह्म परमात्मा साधारण जीवात्मा को अति बड़ा पदो आतन्यन्तिक मोक्ष का पद सरलता से दे देते है । साधन भक्ति के नव प्रकारो में भगवान का स्मरण, कीर्तन भक्ति दूसरे स्थान पर आता है ।

जैसे सुनना अर्थात् सुनना सभी के लिये सरल होता है । इसमें किसी भी तरह की कुशलता तथा श्रम की आवश्यकता नही पडती है । सुनना भक्ति का प्रथम स्थान है । इसके बाद कीर्तन का स्थान आता है । जिसमें थोडा प्रयास करना पडता है ।इसमें मुख से भगवान के नाम का उच्चारण आवश्यक है। इसमें गुणो का वर्णन करना, चरित्र का वर्णन करना, तथा परमेश्वर द्वारा कहे गये उपदेशो का वर्णन करना होता है । यह कीर्तन भक्ति है । ऐसी कीर्तन भक्ति पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में भगवान श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में जब भी होता है तो अनंत फल मिलता है । ता. १८-९-२०२१ से २६-९-२०२१ तक अखंड दिन-रात में षडाक्षरी महामंत्र धून श्रीजी महाराज के प्रसादी विशाल सभा मंडप में हजारो संत-हरिभक्तो ने साथ में मिलकर भाव विभोर होकर किये । ऐसा लगा कि साक्षात् भगवान श्री स्वामिनारायण साक्षात् सभा में बिरामजान रहे हो । ऐसी अनुभूति श्रद्धावान भक्तो को हुई । जिसका वर्णन शब्दो में नही कर सकते है । और हो भी नही सकती है । ऐसी अलौकिक अनुभूति सदैव अपने हृदय में बनी रहे ।वैसी भगवान श्री नरनारायणधेव के चरणो में प्रार्थना करे । यही एक मात्र अपने पास श्रेष्ठ उपाय है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा (सितम्बर-२०२१)

५ श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा आयोजित ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित अखंड महामंत्र धुमन के अवसर पर आगमन।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलनी एकादशी पर श्री गणपतिजी के वरघोडा के अवसर पर आगमन।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित २०० घंटे की अखंड महामंत्र धून पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०२१)

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ''पर्व'' महोत्सव के अवसर पर आयोजित २०० घंटे की महामंत्र धून की पूर्णाहुति पर आगमन।

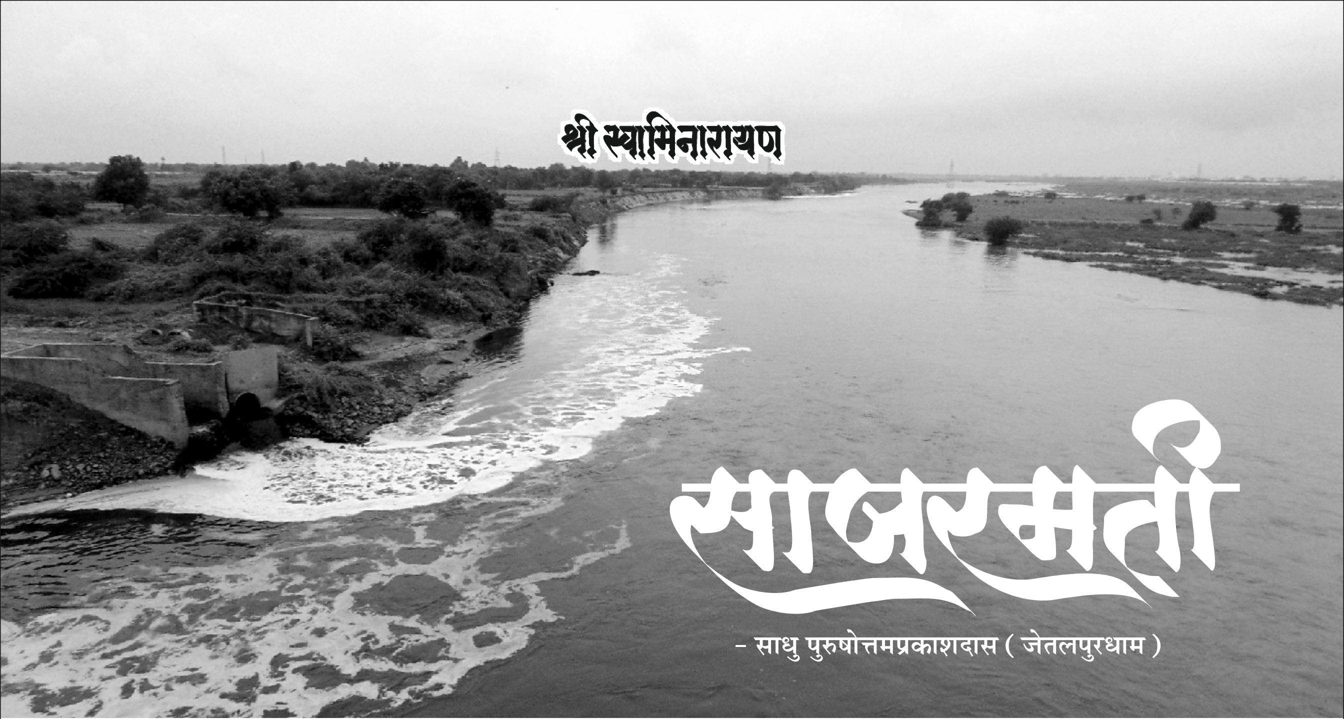

साबरमती

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

महर्षि कश्यपजी आबू पर्वत के जंगल में बैठकर संसार के कल्याण के लिये कठिन तपस्या किये । देवाधिदेव सदाशिव को प्रसन्न करने के लिये हजारो वर्ष तक अन्न, जल का त्याग करके आराधना में लगे रहे । इसी मध्य शिव-पार्वती आकर दर्शन देकर बोले हे विप्रवर ! आप का कल्याण हो । आप हमसे अपने लिये मनोवांछित वर माँगो ।

कश्यपजी आँखे खोलकर देवाधिदेव का दर्शन किये । हे जगतति महादेव । आफ हमको वर देने में सक्षम है । आप के सिर पर जो पनाशिनी पवित्र गंगाजी है । कृपया विशेष कृपा करके हमे प्रदान करे । तभी शिव-पार्वतीने तथास्तु कह दिये । हे विप्र ! समस्त पाप, ताप-रोग -दोषो का नाश करने वाली यहाँ से गंगा प्रगट होगी । ये सतयुग में कृतवती त्रेता में गिरिकार्णिका, द्वापर में चंदना (देव) र कलियुग में साबरमती नाम से प्रसिद्ध होगी । अर्बुदाचल से सागर के संगम तक दोनो तटो पर सभी नदियाँ, तीर्थ, केदारक्षेत्र, पितृतीर्थ, प्रयाग, माधव सहित वटेश्वर, गंगाद्वार सर्वतीर्थमय गंगासागर, सप्तधारक, सतलज, ब्रह्मसर, तीर्थ जल से पूर्ण पवित्र कुंड, नैमिषारण्य आदि क्षेत्र मेरे वचन से सदैव साबर गंगा में निवास करेगे । सागर-गामिनी साबरमती पित्रो को अति प्रिय तथा श्राद्ध में करोडो गुना फल देने वाली होगी । पिण्डदान करने में श्रेष्ठ, स्नान-दान करने वाले को भक्ति और मुक्ति प्रदान करता है । नीलकंठ तीर्थ, रुद्रतीर्थ, रुद्र महालय तीर्थ परम पावनी मंदाकिनी रुप में साबरमती नदी में रहेगे । ब्रह्मतीर्थ, धृततीर्थ, मित्र पट्ट, बैजनाथ, क्षिप्रा, महाकाल तीर्थ, गंगाजी से उत्पन्न होकर हरिद्वार आदि ओमकार तीर्थ नर्मदानदी सदैव साबरमती में रहेगी । ब्रह्मा आदि देव के स्थानक, सप्तर्षि के स्थानक, धर्मदेव के स्थानक प्रत्यक्ष रुप में रहेगे । पितृतीर्थ कावेरी नदी, कपिलाजल अमरकंटक तीर्थ, वात्रकी नदी के संगम सब साबरमती में रहेगे । साबरमती की सम्पूर्ण महिमा का वर्णन स्वयं बृहस्पति भी समर्थ नही है ।

कश्यम हमारे प्रिय भक्त है । इसलिये मैने पवित्र औ पापनाशिनी गंगा दिया हूँ ।

ऐसा कहते-कहते शिवजी मौन हो गये । पार्वती जी बोली, अरे स्वामी ! साबरगंगा को तो बहुत सारा वरदान दे दिये । ऐसा कहकर पार्वती परमेश्वर कैलाश की तरफ चल दिये ।

आदि सतयुग काल में साबरगंगा के किनारे धर्ममूर्ति देवो ने बारह हजार वर्ष तक तपस्या किये थे । इसका विस्तृत वर्णन धर्मारण्य लेख में वर्षित है । वर्तमान में अहमदाबाद शहर जिसका शास्त्रो में नाम श्रीपुर या कर्णावती के उगम स्थान से लेकर उसके किनारे आये ऋषि आश्रम की विस्तृत जानकारी भगवान व्यासजीने किया है ।

साबरमती की महिमा भगवान सदाशिव पार्वतीजीने व्रणन करते हुए कहे है । हिरण्य संगम के पास धर्मतीर्थ जहाँ पर साबरमती के साथ धर्मावती नदी का संगम होता है । वहाँ पर मनुष्य स्नान करने पर धन्य हो जाता है । और भक्ति-मुक्ति प्राप्त होती है । तथा धर्मदेव द्वारा स्थापित तीर्थ का दर्शन करने वाले पुण्य के भागी बनते है । वहाँ पर श्राद्ध करने से पितृ ऋण से लोग मुक्त होते है । तथा विष्णुधाम की उसे प्राप्ति होती है । धर्मारण्य अर्थात् जहाँ पर भगवान नारायणने कठिन तपस्या किये थे । जहाँ पर पिता धर्मदेव माता मूर्ति देवी ने तपस्या किया है । भगवान श्रीनरनारायण प्रगट हुए । वह तीर्थ आज नारायणघाट तीर्थ के रुप में है । साबरमती नदी के दक्षिण तट पर यह तीर्थ आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज तीर्थ की रक्षा हेतु कष्टभंजन देव की स्थापना किये थे । वहाँ पर प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से सद्‌गुरु गवैया स्वामी केशवजीवनदासजीने भव्य पाँच शिखर् वाला मंदिर बनवाये । नारायणघाट के किनारे श्री नरनारायणदेव गद्दी के अक्षर निवासी पूर्व के आचार्यो की स्मृति में बने स्थल है । आचार्य परम्परा के अन्तिम स्मृति नारायणघाट में देखने को प्राप्त होगा । इस स्मृतियो का दर्शन करने से ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगावन के कृपा के अधिकारी बनते है । तथा सभी मनोकामना भगवान पूर्ण करते है । श्रीजी महाराजने अपने मुख से साबरमती के नारायणघाट की महिमा

कश्यपजी तपोभूमि में से गंगाजी साबरमती में प्रगट होकर जिस नदियो में संगम हुआ । वह तीर्थ हो गये । धर्मारण्य आदि धर्म तीर्थ बन गये । उनकी कथाये विस्तार पूर्वक ऋषि राजा कथा के अवसर पर व्यासजी पुराणो में महिमा कहे है । उसमें कई मुख्य-मुख्य स्थापको संगम का उल्लेख किये है ।

साबरमती अर्वुदाचल में नदी कुंड नामक तीर्थ से प्रगट होकर मुनियो को प्रिय कपाल मोचन कुंड, जि समें देवता, नाग, गन्धर्व, किन्नर आदि तथा ःषि मुनि निवास करते है । जो ज्ञान दाता नाम से विख्यात है । वहाँ पर पर्वतो से टकराती फल-फल आवाज करती विशाल आकार लेकर सात धारा में बंट गयी । उसमें से मुख्य धारा साबर, दूसरी श्वेता, तिसरी बकुला चौथी हिरण्यमयी, पाँचवी हस्तमती, छठवी वैत्रवती सातवी भद्रामुखी नाम से विख्यात हुई । बिछडे हुए छः प्रवाह आगे साबरमती में संगम रुप धारण कर लिये ।

इसके पश्चात श्वेतोद्रभव नाम तीर्थ आता है । वहाँ पर महाकालेश्वर का दर्शन करने से सत्‌लोक प्राप्त होता है । वहाँ से बकुलेश्वर तीर्थ गणेश की पूजा करने पर रिध्धी-सिध्धी प्राप्त होती है । वहाँ से पालेवर तीर्थ में चंडीदेवी योगमाताओ के पीठ में माता प्रतिष्ठित है । वगाँ से पुनः साबरमती नदी के किनारे महर्षि कश्यप-वशिष्ठ, वामदेव, गौतम मैत्रेय, धर्मदेव तथा दधीचीने तपस्या किये है । उसमें धर्मदेव और दधिची की तपस्या त्रिलोक में विश्यात है । साबरमती नदी के दोनो तट पर साबर (अर्थात हिरण) अधिक रहते थे । इस कारण से इसका नाम साबरमती पडा है । अभ्रषति अर्थात् आकाश गंगा के रुप में अवतरण हुआ है । कालान्तर में सबारमती नाम हो गया । साबरमती की लम्बाई ३७१ किमी है । कश्यप आदि मुख्य सप्तषियों ने साबरमती के तट पर तपस्या और आश्रम स्थापित किये थे ।

कहे है । सत्संगिजीवन तथा सत्संगिभूषण में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है।

साबरमती के किनारे लगभग ९९९ तीर्थ है। उन तीर्थो का पद्मपुराण में वर्णन है । इसमें से कुछ मधुरातीर्थ, कम्बूतीर्थ, कपिश्वर तीर्थ, सप्ताधार देवेश्वर, ब्रह्मवली, वृषतीर्थ, खंडतीर्थ, अंगमेश्वर तीर्थ, रुद्रमहालय तीर्थ, खडगतीर्थ, चित्राहवदन तीर्थ, चन्देश्वर तीर्थ, जम्बूतीर्थ, धवलेश्वर तीर्थ, बालार्क तीर्थ, दुग्देश्वर तीर्थ जो दूधेश्वर के नाम से जाना जाता है । वहाँ पर दधीची ऋषिने तपस्या किये थे । तथा देवताओ को शरीर का दान दे दिये थे । वहाँ पर चन्द्रभागा नदी का संगम होता है। वहाँ पर चंदेश्वर महाराज बिराजमान है। यहाँ पर चंद्रदेव अधिक समय तक तप किये थे । निम्बार्क तीर्थ आता है । सिद्ध क्षेत्र, सोमतीर्थ, गौतीर्थ, कुशेश्वरतीर्थ वैद्यनाथ तीर्थ, अग्निपालेश्वर तीर्थ, विकीर्ण तीर्थ, श्वेतोद भवतीर्थ, गणतीर्थ, बकुल नदी के स्तम्भ पर आये बकुलेश्वर तीर्थ यहाँ पर गणपतिजी कठिन तपस्या करके गंगाधिपति का पद प्राप्त किये थे । कपालकुण्ठ तीर्थ अनेक तीर्थ उत्तर और दक्षिण तरफ संगम तीर्थ है । पद्मपुराण के आधार पर वर्णन किया है।

अपने आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने साबरमती के किनारे धर्मारण्य क्षेत्र में आदि सत्युग में धर्मपिता भक्ति माता के द्वारा (नारायणघाट तीर्थ) प्रार्दुभाव हुआ । इशके कारण साबरगंगा का महत्व बढ गया । और भगवान भोलेन्नाथ ने कश्यप जी को वरदान दिये थे कि साबर गंगा के तट पर परात्पर परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम युगल स्वरुप नरनारायण के नाम से अवतार लेगे । यह बात सत्य हुई । आगामी श्री नरनारायण भगवान के पर्व उत्सव आ रहा है । इस अवसर पर नारायणघाट तीर्थ में श्री नरनारायण भगवान के धर्मपिता भक्तिमाता तथा धर्मकुल के पूर्व आचार्यो की स्मृति स्थान का अवश्य दर्शन का लाभ उठाये।

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन कृष्ण-७ गुरुवार दि. २८-१०-२०२१ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१२ मंगलवार दि. ०२-११-२०२१, बारस ११-३० तक है। धनतेरस महालक्ष्मी पूजन।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१४ बुधवार दि. ०३-११-२०२१ को प्रातः ९ बजे तक लक्ष्मी पूजन, इसके बाद काली चौदश कालुपुर मंदिर श्री हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ७-०० प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया जायेगा।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-३० गुरुवार दि. ०४-११-२०२१ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-०० बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिवत संपन्न किया जायेगा।

नूतन वर्ष-अन्नकूटोत्सव : कार्तिक सुद-१ शुक्रवार दि. ०५-११-२०२१

मंगला आरती प्रातः ५-00 बजे ।
शृंगार आरती प्रातः ६-३0 बजे ।
गोवर्धन पूजा प्रातः ८-00 बजे ।
राजभोग आरती प्रातः १२-00 बजे ।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-00 बजे से ३-३0 बजे तक ।

श्रीहरि के ६ड्डे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा । नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें।

(श्री कमलेशभाई गोर)

श्री नरनारायणदेव ध्वजा के यजमान

रु। ११,०००-०० प.भ. मितेषकुमार राजाणी श्रीनगर कलोल

रु। ११,०००-०० प.भ. शांतिलाल गोपालभाई दबासिया – मानकुवा (कच्छ)

पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

श्रीहरि अयोध्याप्रसाद से घर का त्याग करके वन-विचरण के समय निलकंठव्रणी के रुप में अनेक तीर्थो, जंगलो, पर्वतो, नदियो का पावन करते हुए । वि.सं. १८८५ (ई.स. १८००) में सर्वप्रथम श्रीनगर कहे जाने वाले अहमदाबाद में पधारे थे ।

नीलकंठवर्णी कांकरिया सरोवर के पास आये । उस समय कांकरिया सरोवर अति सुंदर था । सरोवर में स्नान करके पूर्वतरफ के नाले के तरफ बैठकर अपना नित्य कर्म करने लगे । बाहर से सूचना फैल गई की कांकरिया तालाब पर एक महाचमत्कारी बालयोगी आये है । शहर के धर्मप्रेमी, भाविक भक्त दर्शन करने आने लगे । सभी लोग श्रीहरि के सामने हाथ जोडकर बैठ गये । श्री नीलकंठवर्णी उनको धर्म तथा मोक्ष का उपदेश दिये । जिससे सभी मुमुक्षु का मन शांत हुआ । इस तरह शहर के लोग दर्शन करने आने लगे । श्रीहरि के उपदेश से शांति मिलती थी । भक्तगण अनेक प्रकार के फल तथा मिठाईयो भेट के रुप में लाते थे । कुछ प्रभु को भोग लगाकर शेष भक्त जनो में बाँट देते थे । श्री नीलकंठवर्णी का यह भाव देखकर नगर निवासी आश्चर्य चकित हो गये ।

उस समय अहमदाबाद शहर में रहने वाले रामानंद स्वामी के शिष्य तथा वे स्वयं दर्शन के लिये आये थे । श्रीहरि के दर्शन करने मात्र से उनके मन की वृत्तियाँ श्री नीलकंठवर्णी के रुप में अनायास आकर्षित हो गई । रामानंद का लगाव अन्य कही पर नही होता था । लेकिन इनके पास आने पर समझ गये कि ये कोई सिद्ध योगी है । ये जब तक यहाँ पर रहे उतने दिन कांकरिया में स्नान करके छोटी धर्म सभा का आयोजन रखते थे । कभी शहर के उत्तर तरफ शाही महल के पास साबरमती के किनारे जाकर स्नान करते और लोगो को बताते थे ।

''आदि सतयुग में इस स्थान पर नदी के किनारे धर्मदेव का आश्रम था । यहाँ पर धर्मदेव और मूर्तिदेवीने हजारो वर्ष तक तपस्या करके भगवान को खुश किये । भगवान खुश होकर उनके द्वारा नर, नारायण, हरिकृष्ण ये चार स्वरुप प्रगट हुआ । इस कारण से यह साबरगंगा र उसके घाट अति प्राचीन और महापवित्र तीर्थ क्षेत्र है । और श्री नारायण के प्रगट होने से इस किनारे का नाम ''नारायणघाट'' है ।

आज से २०० वर्ष पूर्व श्री सहजानंद स्वामी महाराजने, श्रीनगर के नारायणघाट पर आये और बद्रिकाश्रम में भक्तजनो के लिये वेर के नीचे बैठकर तपस्या कर रहे श्री नर और श्री नारायणने अहमदाबाद के मध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर अपने हाथो से अनपे शक्ति अनुसार स्थापना किये । श्री नरनारायणदेव के स्थापना के २०० वे वर्ष पूर्ण हो रहे है । इस उपलक्ष्य में ''पर्व'' उत्सव अपने हाथ में है । अहमदाबाद के आँगन में दस्तक दे रहा है । मंदिर मंदिर से पदयात्री, अखंड धून, नित्यकथा अविरत चालू है ।

''पर्व'' का कारण भले ही छोटा हो । लेकिन उसका उदेश्य गति विशाल है । और क्यो न हो ? स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवान ही श्री नरनारायण स्वरुप में अखंड स्वरुप में विराजमान है ।

''निराहारी प्राणी तो विषय से छूट जाते है । लेकिन विषयो के प्रति रस (वासना) दूरी नही होती है । ये रस मात्र परमात्मा के दर्शन से दूर होता है ।'' श्रीमद् भागवत गीता अध्या-२ (५९)

श्री नरनारायण महाप्रभु का दर्शन अद्भुत होता है । हृदय के सभी उद्गार अनायास समाप्त हो जाते है । ऐसे अद्भुत महिमावत श्री नरनारायण भगवान के महामहोत्सव का प्रेम पूर्वक स्वागत करे ।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

अडालज

संकलन : प्रफुल खरसाणी

अहमदाबाद से कलोल एस.टी. बस जाती है। उससे अडालज जा सकते है। अहमदाबाद सडक द्वारा ३४ मिनिट तथा अहमदाबाद एअर पोर्ट से २२ मिनिट का समय लगता है।

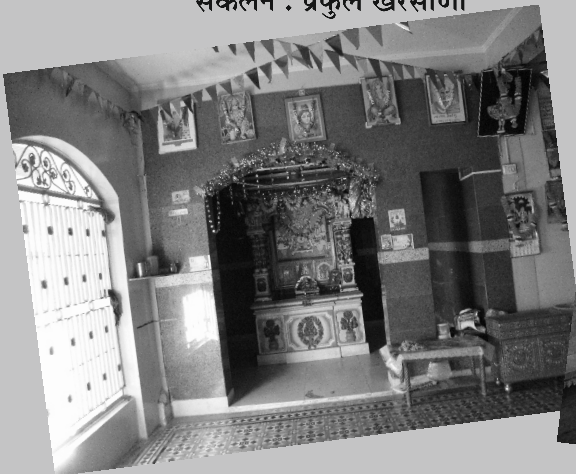

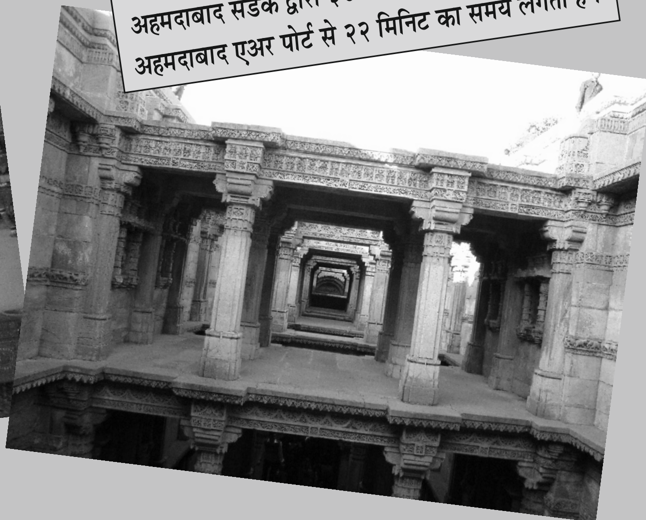

अडालज बस स्टेशन (रोड) से अडालज गाँव लगभग आधा किलोमीटर दूर है। यह गाँव गांधीनगर जिले में आता है। यहाँ पर हरिमंदिर है। मंदिर पूर्व मुखी द्वार वाला है। यहाँ पर सहजानंद स्वामी की पटमूर्ति स्थापित है।

श्रीहरि यहाँ कईबार आये थे। वाव यहाँ पर प्रसादी की है। उसमें पाँच सौ परमहंसो सहित स्नान किये थे। गाँव के पश्चिम भाग में एक हनुमानजी का मंदिर है।

इस गाँव की जमीन श्रीहरि के चरणरज से कई बार पवित्र हुई है। श्रीहरि इस गांव में पांचसौ परमहंस सहित स्नान करके अडालज वाव की महिमा बढाई है। श्रीहरि जब भी दंढाव्य देश की यात्रा पर जाते थे। आते जाते समय गाँव में अवश्य आते थे।

श्रीहरि अडालज में आकर अडालज वाव में स्नान करके वाव की महिमा बढाये। यह प्रसंग ''श्री घनश्याम लीलामृत सागर'' नामक ग्रंथ के ३ तरंग ४८ में निम्नलिखित अनुसार है।

-: चोपाई :-

जमी त्यांथी कर्युं विचरण, अडालजे अशरण शरण ॥
त्यांनी वाव जोई अभिराम, राजी थया देखवी रुडुं काम ॥७॥
लेख लख्यो छे पत्थरमाय, विचारीने वांची जोयो त्यांय ॥
वाव्यकरनो जेह शुध्ध भाव, जाणी बोल्या नटवर नाव ॥८॥
जेणे कर्युं हंमेशां आमां काम, ते सर्वे पामशो मोक्ष धाम ॥
एम कैने कर्युं छे त्यां स्नान, निज पार्षद साथे ते स्थान ॥९॥
प्रेम वडे कर्युं जलपान, विचर्या त्यां थकी भगवान ॥
श्रीनगर पोच्या सुंदर श्याम, चोकसी हिराचंदने धाम ॥१०॥

इस प्रकार वाव में स्नान करके अति खुश होकर वाव में लिखे गये लेख को पढकर, वाव में काम करने वाले सभी को अक्षरधाम का सुख दिये।

अडालजमां श्रीहरि :

श्रीहरि के बनाया विस्तारथी वावनो महिमा

श्रीहरि उनावा से रास्ते से आते अडालज गाँव की सीमा में आकर वाव के पास आये । किसी धनवान औरत ने लाखो रुपया खर्च करके अपनी मुक्ति के लिये, कई मंजीले युक्त, सुंदर चित्रकारी वाला, तथा अनेक सुंदर सीढीयो वाला, मनोहर, हरे वृक्षो से पूर्ण शुद्धजल तथा पक्षियो के कलरव से पूर्ण वाव बनाया था ।

वहाँ पर श्रीहरि घोडी से उतरे थे । तथा उस वाव को तीर्थ रुप करने के लिये । अपने आश्रितो के साथ सुंदर सीढीयो के द्वारा वाव में प्रवेश किये थे । श्रीहरि ने अपना दोनो पेर तथा हाथ वाव में धोये थे । बाद में मुकुन्दानंद वर्णीने सुंदर पात्र में जल को छानकर पिये थे । वाव का शीतल शुद्ध जल था । बाद में श्रीहरि अपने अपने आश्रितो के साथ बाहर आये थे । वहाँ पर श्रीहरिने हसी मजाक के लिये अपने दोनो पैर एक पैजामे के भाग में डाल दिये थे । सभी हरिभक्त मजाक समझकर खुश हुए । रात्रि के समय अपने आश्रितो के साथ वाव के पास रहे थे । गाँव के कई हरिभक्त श्रीहरि के दर्शन हेतु आये थे । सभी ने श्रीहरि का दर्शन किये थे । श्रीहरि उनके आगे कल्याण सम्बन्धी कई चर्चा किये थे ।

श्रीहरि के द्वारा कल्याणकारी बाते सुनकर लोग विस्मय हो गये । कई लोग श्रीहरि को परमेश्वर समझकर श्रीहरि से नियम धारण किये । सभी ने योग्यतापूर्वक सेवा दिये थे । श्रीहरि वहाँ पर रात्रि रहकर प्रातः आश्रितो के साथ चले गये । श्रीहरि अपने उत्तम अश्व उपर बिराज ते हुए । तथा शीध्रता से चलने लगे । वहाँ से मोटेरा गाँव गये थे ।

श्रीहरिने वाव बनाने वाले को सत्संग में जन्म दिये । एकबार श्रीजी महाराज अडालज आये थे । और वाव के पास रुके थे । और स.गु. निष्कुलानंद स्वामी वाव में जाकर शीलालेख को पढे थे । उसमें लिखा था कि मै इस वाव का निर्माण इस लिये करवाया है कि कोई संत पुरुष यहाँ पर आपे स्नान और जलपान करे । इससे मेरा कल्याण होगा । दूसरे खर्च तो मैं नही लिखवा सकती लेकिन लाख रुपये जितना खर्च हुआ है । यहा लेख पढकर स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने श्रीजी को बताया था । वहाँ पर सभी संतो के साथ श्रीहरि भी स्नान किये थे । सभी भोजन करके वाव का शीतल जल पीये थे । महाराजने कहा कि इस वाव को बनवाने वाला सत्संगमें जन्म लेगा । इससे जुडे सभी प्राणीयो का भी कल्याण होगा । वह औरत पेटलाद के पास धर्मज गांव में गरासिया के घर जन्म लेगा । और कुशल कुँवर बाई के नाम से प्रसिद्ध होगे एवम उसके पति सुंदरीयाणा के हेमराजसा वनिया थे ।

इस प्रकार श्रीहरि अडालज में पाँच सौ परमहंसो के साथ पधारे थे. प्रसिद्ध वाव दर्शनीय स्थल के रुप में विकसित है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

म्यूजियम में लक्ष्मीपूजन तथा हनुमानजी की पूजा

ता. ०३-११-२०२१ बुधवार को प्रातः नव बजे तक धनतेरस और इसके बाद काली चौदश होने से अपने म्यूजियम मे ३ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूजन होगा । प्रत्येक वर्ष की तरह पूजित सिक्के म्यूजियम में उपलब्ध रहेगा ।(अग्रिम बुकींग कराये)

इसके बाद म्यूजियम में प्रस्थापित प्रसादी के हनुमानजी का भी प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा पूजन होगा । जिसका सभी हरिभक्तो को लाभ प्राप्त होगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची सितम्बर-२०२१

दि. ०१-०९-२०२१	प.भ. अल्काबेन जीतेन्द्रभाई पटेल – बापुनगर – ह. रोहन दासभाई ।
दि. ०२-०९-२०२१	(प्रातः) प.भ. नवनीतभाई जयंतीभाई पटेल – बापुनगर – ह. कृपाल दासभाई (दोपहर) प.भ. विजलबेन पंकजकुमार पटेल – न्युजर्सी (करजीसणवाले)
दि. ०४-०९-२०२१	प.भ. रणछोडदास प्रहलाददास पटेल – न्यु राणीप – ह. गोमतीबेन पटेल (राजपुरवाले)
दि. ०५-०९-२०२१	(प्रातः) प.भ. सोनी अमृतलाल हरिलाल परिवार – लींबडी – ह. दिलीपभाई तथा महेन्द्रभाई (दोपहर) सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर – प्रेरक महंत स्वामी ।
दि. ०८-०९-२०२१	प.भ.अ.नि. गोकलदास नारणदास पटेल – देवसणावाले – प्रेरक प.भ. उदयनभाई ए. महाराजा ।
दि. २६-०९-२०२१	प.भ. मालीबेन तीर्थकुमार पटेल – अमेरिका – ह. परेशभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि- सतम्बर-२१

रु।. १,००,०००/-	श्रीमती चंपाबेन हरिभाई मारु ।
रु।. ५१,०००/-	प.भ. सोनी चुनीलालभाई दुर्लभजी परिवार – ह. जयेन्द्रभाई सोनी – राणीप
रु।. ५०,०००/-	प.भ. पंकजभाई पटेल, धर्मिष्ठाबेन पटेल, अर्पितभाई पटेल ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

॥ शुभ निमंत्रण ॥

सर संवेश आणिले सगळे, सुख सुरेख आणि शेष।
शिवाय सुरत शिकवणेचा हितकर देव हमेशा ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री नरनारायणाय नमः ॥

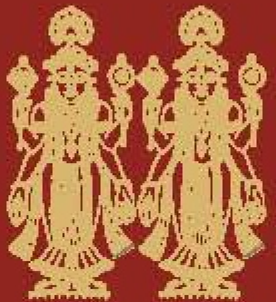

श्रीमान

आपको सुचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि परम कृपालु परमात्मा श्री नरनारायण भगवान की असीम अनुकंपा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद संस्थान श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् सौभाग्यवती गादीवालाश्री के सुपुत्र एवम् प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी देवेन्द्रप्रसादजी एवम् सौभाग्यवती मातुश्री के पौत्र एवम् आयुष्मती श्रीराधाश्री के अग्रजभ्राता भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज का शुभ विवाह प्रतापगढ उत्तरप्रदेश निवासी श्री राकेशमोहनजी दयाशंकर उपाध्याय की आयुष्मती सुपुत्री के साथ वि.सं. २०७७ कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा दिनांक – २०/११/२०२१ शनिवार के दिन सुनिश्चित हुआ है।

इस मंगलमय शुभ अवसर पर आप उपस्थित होकर शोभा में अभिवृध्धि करे।

निमंत्रक

प.पू.ध.धु.आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से

शास्त्री वासुदेव डी. पुरोहित

प्रधान पंडित

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर अहमदावाद एक

मंगल कार्यक्रम

॥ तिलक विधि ॥
दिनांक :- १६/११/२०२१ मंगलवार
समय - सांय ०४:००
-: स्थल :-
श्री स्वामिनारायण मंदिर छपिया,
जिला - गोंडा, उत्तरप्रदेश

॥ शुभ विवाह ॥
दिनांक :- २०/११/२०२१, शनिवार
मध्यरात्रि
-: स्थल :-
रेवती रीसोर्ट, सेवा अस्पताल के पास,
सीतापुर रोड, लखनउ, उत्तरप्रदेश

॥ सत्कार समारंभ ॥
दिनांक :- २८/११/२०२१ रविवार
समय - सांय ०५:०० से ८:००
-: स्थल :-
श्री नरनारायण नगर, नारणपुरा,
अहमदावाद

નોંધ
**સર્વે સત્સંગીઓને જણાવવાનું કે છપૈયાના માંગલિક પ્રસંગો તથા
લખનઉ ખાતેના જાન પ્રસ્થાન પ્રસંગમાં હાજર રહેવાની અનુમતી છે.**

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "विनासी सुख छोडकर अवनाशी सुख की तरफ प्रयाण करना"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम यह सत्संग करते है तो किसके लिये करते है ? सुख के लिये करते है । जीव मात्र सुख खोजता है । संसार में सभी लोग कार्य सुख के लिये करते है । दुःख के लिये कोई कार् यनही करना है । कोई 'आत्म हत्या' करता है । वह केवल अपने दुःख को दूर करने के लिये करता है । लेकिन समस्या यह है कि जिसे हम सत्य मानते है । वह मिथ्या है । यह सुख संसार द्वारा, शरीर द्वारा, ईन्द्रियो द्वारा सुख प्राप्त होता है । उसे हम सत्य मान लेते है ।हमे यह ज्ञान नही होता है कि यह सुख विनाशी है । संसार की जो वस्तुए विनाशी है । उसी प्रकार अपनी शरीर और इन्द्रियाँ विनाशी है । विनाशी वस्तु अविनाशी सुख कभी भी नही दे सकती है । इस लिये हम भ्रम में रहते है कि ? हम लगातार विनाशी वस्तु से सुख प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहते है । हमे मन शांत रखकर विचार करना है कि जो परिवर्तन शील है । वह सनातन नही हो सकता है । उसी भ्रम से बाहर निकलना है । हमारी इन्द्रियो कब सक्रि यहोती है । जब संसार से आसाक्ति और रस होता है । तब इन्द्रियो जागृत होती है । स्वाद मिले, देखना, सुनना सब अच्छा लगता है । ये सभी विचार शक्ति पर आधारित है । विचार कब आते है ? नींद में शांति मिलती है । ऐसा क्यो कि आप को उसकी अनुभूति नही होती है । जागने पर महसूस होता है और विचार सक्रिय हो जाते है । उन्ही विचारो के अनुरुप कार्य करते है । इच्छा पूरी होने पर सुख मिलता है । यही सुख आगे दुःख प्रदान करता है । क्यो कि जो है उससे अधिक पाने की ईच्छा होती है । प्रत्येक वस्तु का खराब असर पडता है । दवा के खाने पर रोग समाप्त हो जाता है । दवा का भी खराब प्रभाव पडता है । जल ही जीवन है । अधिक पीने से कष्ट मिलता है । कम पीने पर भी कष् होता हा । अधिक भूख लगने पर अधिक खा लेते है । उस समय भूख लगने पर विचार नही आता है । खाने के बाद शरीर को कष्ट मिलात है । जीवन में सहजता लाने का प्रयास करना चाहिए । सहजता सबसे बडा गुण है । यह अविनाशी सुख की तरफ से जाता है । सभी दुखो का मूल ईच्छा है । इच्छा का मूल अज्ञानता है । अनपे स्वरुप के अज्ञानता के कारण इच्छा प्रबल होती है । तो अपना सत्य स्वरुप क्या है ? अपना सच्चा स्वरुप आत्मा है । हम स्वंय अविनाशी है । हम शरीर को सत्य स्वरुप मान लेते है । हम शरीर के इन्द्रिय सुख के लिये दौड लगाता है । विषय वासना का चिंतन मित्ययाचार होता है जीवन में भगवान के विचार रखे । धीरे-धीरे यह ज्ञान हो जायेगा । जीवन में संयम रखने से सुख मिलेगा । यही सुख जीवन को सुखी और पवित्र बनायेगा । बंधन से मुक्ति करेगा । बंधन मुक्ति कठिनाई से मिलता है । कुम्भार मिट्टी का

बर्तन बनाने के पूर्व क्या करता है । पानी और मिट्टी को मिलाकर बर्तन बनाता है । उसे आग में पकाता है । पात्र को अग्नि में तपना पडता है । तब जाके मजला होता है । इसी प्रकार जीवन में भी भगवत प्राप्ति के लिये तपना पडता है । तभी हम अपने लक्ष्य तक पहुंचते है । शांत समुद्र में नाव तो चलाई जा सकती है । लहर भी हो हमें विपरीत दिशा में जाना हो तो कुशल नाविक की आवश्यकता होती है । परिस्थिति से धबराना नही चाहिए । अच्छा और सत्य ही जीवन में ग्रहण करना चाहिए । शूरवीर बनकर भक्ति करना चाहिए । भगवान के सिवाय कोई भी १००% पूरा नही है । हर जगह काला सफदे है । अपना मन बंदर की तरह चंचल है । गुलाट मारना नही भूलता है । हमे मन के शत्रुओ से लडने के लिये मधुमक्खी की तरह बनना पडेगा । मधुमक्खी मात्र फूल के उपर जाती है । दूसरी मक्खियाँ और जगहो पर भी जाती है । मधुमक्खी से सभी लोग उसके डंक से डरते है । इससे अंत:शत्रु भी डरते है । हमें अपनी प्रशंसा सुनकर अच्छा लगता है । श्रवण इन्द्रिय सुख की प्राप्ति करती है । अच्छा सुनने की आदत बन जाती है । इसके बाद कोई जब खराब बोलता है तो हमें बुरा लता है । हमें मेरे का भाव त्यागना चाहिए । इन्द्रिय सुख को सत्य मान लेते है । यह मात्र आभास होता है । टी.वी. के उपर सभी लोग मूवी देखते है । यह सत्य नही परदे के उपर आता है । तो भी हम लोग दृश्य देखकर खुश और दु:खी हो जाते है । औऱ वह मात्र चाया है । मन की ज्ञात है फिर भी हम सत्य मान लेते है । उसी प्रकार दर्पण में अपनी छाया दिखाई देती है । वास्तव में वह हमारी छाया है । ईन्द्रियाँ जो दिखाती हैं वही सत्य नही होता है । सीमित सत्य होता है । सच्चे 'आत्मस्वरुप' के ज्ञान के बाद मैं समाप्त हो जाता है । 'मै' समाप्त होने पर वैराग्य आता है । इसी समय प्रभु का 'वितराग' स्वरुप समझ में आता है । तब तक चिंता करने की आवश्यकता नहीहै । हम लोग सत्संग करते है । सच्चे रास्ते पर है । लगातार जागृति लाना है । भगवान के शरण में हमें जाना ही नही । हम सब भगवान के शरण में ही है । मात्र सम्पूर्ण समर्पण का भाव होना चाहिए । हमे माया नही परेशान करेगी क्योकि ? माया उनकी दासी है । उस सच्चे मालिक के शरण में हम लोग है । हम लोग मोक्ष की नाव में बैठे हैं । इस सत्संग रुपी नाव को छोडना नही है । यह धीरे-धीरे हमे लक्ष् यकी तरफ ले जायेगी ।

निम्न लिखित मंदिरो के नव नियुक्त महंत स्वामी

सुरेन्द्रनगर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये मंहत स्वामी स.गु. स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी गुरु स.गु. स्वामी उत्तमप्रियदासजी (मूली-मंदिर)

अंजलि-वासणा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये मंहत स्वामी स.गु. स्वामी सत्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी (मूली-मंदिर)

संप्रदाय के गौरव

मूल विहार गाँव के श्री नरनारायणदेव के आश्रित प.भ. साकलचंद भगवानदास पटेल की सुपुत्री चि. श्रीजिताने फरवरी २०२१ में गुजरात सरकार द्वारा ली जाने वाली **G.P.S.C.** की परीक्षा उत्तीर्ण की है । यह पुलिस उपाधिक्षक के पद पर चयंनित हुई है । उन्होने अपने सम्प्रदाय और विहार गाँव के गौरव की वृद्धि की है । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने उसकी उत्तरोत्तर प्रगति लीए और आशीर्वाद दी है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जलझीली महोत्सव

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीजी महाराज के समय से प्रति वर्ष परम्परागत जलझीलनी एकादशी समैया उल्लास पूर्वक मनाया जाता है । अपने वेदोक्त प्रत्येक धार्मिक पर्व के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के ओच्छव मंडल श्री नरनारायण भगवान के सानिध् यमें नंद संतो द्वारा रचित उस उत्सव के पदो का गायन, भूंगल, मंजीरा औऱ डोल के सुंदर नाद के साथ ओच्छव किया जाता है । ता. १७-९-२१ के दिन प.पू. महाराजश्रीने उत्सव के गणफति तथा ठाकुरजी की पूजा-आरती करने के बाद आये दर्शनार्थियो को पेंडा अपने हाथ से दिये थए । तथा श्री नरनारायण को फूल हार पहनाये थे । ओच्छव मंडल के मध्य बैठकर हाथ में मंजीरा लेकर भाव से बजाये थे । तथा ओच्छव मंडल के उत्साह को बढाये थे ।

इसी प्रकार अपने आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री भी स्वयं रचित वर घोडा में गाते थे । दर्शनार्थीयो को यह दिव्य सुख मिलता है । आज के दिन वामन द्वादशी होने के कारण पूजारी ब्रह्मचारी संतोश्रीने श्री नारायण भगवान का वामन स्वरुप का दर्शन कराये थे ।

दोपहर में १२ बजे श्री गणपति तथा ठाकुरजी के हवेली में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के हाथो द्वारा पूजा कराके मंदिर के भऊदेव तथा ब्रह्मचारी स्वाी पू. मुकुंदानंदजी पालखी को तीर्थ भूमि श्री नारायणघाट मंदिर के प्रांगण में स्टेज पर रखे थे । वहाँ पर सभी भक्तो ने दर्शन किया । ठाकुरजी का नौति विहार दर्शन सभी ने किया । कालुपुर मंदिर के साथ ही साथ नारा?णघाट, नारणपुरा तथा एप्रोच बापूनगर मंदिर से आये गणफतिजी उस मंदिर के पू. महंत स्वामी यजमान के साथ रहकर उत्तर पूजन करके अन्त में पवित्र कुंड के जल में विसर्जन किये थे । इस अवसर पर जेतलपुर, मूली, लीमडी से संत आये थे । कालुपुर मंदिर के महंत पू. शा. स्वामी निर्गुणदासजी सहित कई विद्वान संत अवसर जन्य अमृतवाणी का लाभ दिये । नारायणघाट मंदिर के महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजीने अति सुंदर सभा का संचालन तथा आवश्यक सामान की व्यवस्था किये थे । प.पू. गादीवालाश्री की आज्ञा से प.पू. लालजी महाराजश्री के विवाह के निमित्त ता. २०-१०-२०२१ शरदोत्व में रासोत्सव के लिये सभी को सार्वजनिक आमंत्रण दिये । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अहमदाबाद मंदिर में २०० घंटे की अखंड धून

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से और पू. स.गु. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से श्री चंपकभाई तथा समस्त कोठार परिवार तथा विपुलभाई ठक्कर द्वारा व्यवस्था तथा प.भ. अरविंद आर. डोंगा तथा पुत्र शालिन के यजमान पद से आगामी पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १८-९-२१ को प्रातः ८-१५ से २६-९-२१ शायं ४-१५ तका अकंड २०० घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई थी ।

प्रसादी के सभा मंडप में प.पू. बडे महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारे थे । तथा धून को शुरु करवाये थे ।

कालुपुर मंदिर का ओच्छव मंचल, नारायणघाट, कांकरिया, न्यु राणीप, नाराणफुरा, हर्षद कोलोनी, एप्रोच (बापुनगर), कर्मशक्ति, निकोल, घाटोलडिया, आर.सी. टेक्नीकल, नवा वाडज, मेमनगर, बोपल, हीरावाडी, झडेश्वर, डीसा, विरमगाम, दियोदर, भाभर, लवारपुर, नंदोल, धमासणा, लसुन्द्रा, नरोडा, बालासिनोर, धरमपुर, डांगरवा, टांकिया, कालीयाणा, मारुसणा, कंजरीकम्पा, कोटंबा, माणसा, विसनगर, लूणावाडा, मेणाव, चाणस्मा, कपडंवज, बालवा, कलोल (पंचवटी), पालनपुर, पाटडी, जरवल्ला, बामणवा, मांडल, झूंडाल, ट्रेन्ट, पाटडी, धोलका, राजकोट, भुज आदि सूदूर से पधारे थे । इस में सभी लोगने भाग लिया था । युवक मंडल धून के साथ रासोत्सव से सभा मंडप भर गया था । बहने भी अधिक संख्या में आकर मंडप में बैठकर धून में भाग ली थी ।

ता. २४-९-२१ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पीठ स्थान पर बैठकर धून किये थे । ता. २६-९-२१ के दिन अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री आकर यजमान परिवार को तथा सहभागियो को आशीर्वाद दिये थे । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम

श्री नरारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी और एप्रोच मंदिर के दोनो पू. महंत स्वामी के प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से ता. ३०-८-२१ के दिन ढाई घंटे तक धून कीर्तन, वार्ता, कथा, आरती, ओच्छव के साथ श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी उल्लास पूर्वक मनाई गई थी ।

ता. ६-९-२१ के दिन पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः श्रीहरि की स्मृति के साथ श्रीहरि चरणो से अंकित प्रासदी की जगह खोखरा गाम नथु भट्ट के घर छत्री चरारविंद, कांकरिया सरोवर तथा कांकरिया मंदिर की पैदल यात्रा की गई थी । जिस मं संतो के साथ हजारो हरिभक्त जुडे थे । एप्रोच तथा कांकरिया दोनो मंदिरो के पू. महंत स्वामी प्रसादी के जगहो की महिमा बताये थे । अब प्रत्येक अमावस्या को अहमदाबाद के प्रसादी स्थलो की पद यात्रा चालू रहेगी । इस दिन मंदिर तथा अह. म्यू. कोर्पोरेशन इंडिया कोलोनी वार्ड द्वारा निशुल्क कोरोना वैक्सीन कैम्प लगाया था । जिसमें २४० से अधिक निवासीयो ने वैक्सीन लगवाये थे । ता. १०-९-२१ से १७-९-२१ तक गणफति के उत्सव के अवसर पर विशे,पूजा, आरती, थाल की गई थी । ता. ११-९-२१ के दिन पर्व के उपलक्ष्य में साप्ताहिक लाक डाउन के बाद पहली बार प्रथम बार मंदिर के बाहर ठक्कर नगर क्षेत्र में हुई थी । सभा में एप्रोच, कालुपुर तथा गांधीनगर से-२ से आये संतो ने पो,ण किये थे । ता. १४-९-२१ राधाष्टमी को राधिकाजी के प्रागट्य की आरती की गई थी । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी में धून तथा गणपति उत्सव

श्री नरनारायणधेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से प.भ. श्री दासभाई के मार्गदर्शन में पर्व के उपलक्ष्य में २०० घंटे के धून के अर्न्तगत ता. २९-८, ५-९, १२-९, १९-९ तथा २६-९-२१ को अखंड पाँच घंटे तक धून यशस्वी यजमान पद से की गई । जिस में ५-९-२१ की धून योगीवर्य स.गु. गोपालानंद स्वामी के जन्म स्थल टोरडा मंदिर में हुई थी ।

ता. १९-९ से २७-९-२१ तक गणपति उच्छव प.भ. श्री रमणीकभाई तथा अश्विनभाई सरधारा यजमान पद से पूर्ण किये थे । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर Seekh के माध्यम से उच्च कोटि की जन सेवा तथा पर्व नित्य सत्संग कथा के माध्यम से उत्कृष्ट सत्संग सेवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के अद्यतन टेक्नोलाजी के सत्संग प्रचार-प्रसार में अधिकतम उपयोग हो सके इसके लिये प्रयत्नशील है । वर्तमान समय में देश-विदेश में शिक्षापत्री का महत्व सभी को अच्छी तरह से समझ में आये । और श्रीहरि के आज्ञा का पालन करके समाज सुखी हो ।ऐसे सुभ उद्देश्य से स्वयं प.पू. लालजी महाराजश्री, पू. श्रीराजा तथा उनकी युवा टीम कालुपुर मंदिर द्वारा शिक्षापत्री आधारित जैसे की फैक सान, शराब, जुगार, तम्बाकु, घूस, आप-व्यय, स्वच्छता, जहाँ तहाँ थूकना, गाली देना, आत्महत्या करना इत्यादि २१ जनवरी से प्रारम्भ करके अगस्त २१ तक Seekh टाईटल के अर्न्तगत कुल ३५ शार्ट फिल्म एपिसोड हिन्दी भाषा में विडियो बनाये थे । प्रति रविवार का नये एपिचोस डोक लाईव प्रसारण टी.वी. चैनल तथा यू. ट्यब के माध्यम से किया गया था । प्रत्येक एपिसोड युवा वर्ग के लिये प्रेरणा देने वाला है । कालुपुर मंदिर द्वारा विना स्वार्थ के धर्मकुल की प्रेरणा से और मार्गदर्शन से ऐसी समाज सेवा होती रहती है । श्रीहरि के सर्वजीव हित हेतु संदेश को करते हुए । मूल सम्प्रदाय के लोग गौरव अनुभव करते है । शिक्षापत्री कभी पुरानी नही होती है । यु. ट्युब पर Seekh शीर्षक के अर्न्तगत कई एपिसोड देखने को प्रेरित करके समाज सेवा की जा सकती है । इससे आराध्यदेव श्रीहरि खुश होते है ।

आगामी पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से अहमदाबाद देश के सभी युवा विद्वान संत अप्रैल-२०२१ से श्रीमद् सत्संगिभूषण तथा भक्तचिंतामणी ग्रंथ आधारित पर्व नित्य सत्संग कथा का सुमधुर संगीत के साथ आनलाईन लक्ष्य चैनेल तथा कालुपुर मंदिर के यु.ट्यब चैनल लाभ दे रहे है । प्रत्येक संत के १५ दिन की कथा क्रम अनुसार १६० भाग प्रसारित हो चुका है । घर बैठकर भक्त जन कथा सुनकर धन्य हुए । जन्म-मरण के भव रोग को टलाने के लिये श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान अहमदाबाद मंदिर के आयोजन से प्रसाहित होने वाले पर्व हेतु नित्य सत्संग कथा सपरिवार नियम पूर्वक सुने और दूसरे को प्रेरित करे । कथा के अंत में प्रसारित होने वाला श्री नरनारायण अष्टक सुनकर तथा समस्त मंदिर संकुल का दर्शन करके श्री

नरनारायण भगवान के प्रति निष्ठा दृढ करे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने 'पर्व' महामहोत्सव के उपलक्ष्य के संत शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी और स्वा. अनंतस्वरुपदासजी आदि संत द्वारा बढीयार विस्तार के नीचे के गाँवो में धार्मिक और सामाजिक क्रिया कलाप की सूची है।

(१) सीतापुर : ३ दिवस ग्राम सभा, महामंत्र लेखन, पधरामणी द्वारा पर्व का आमंत्रण और व्यसन मुक्ती अभियान ।(२) वणोद : २ दिवस ग्राम सभा, वृक्षा रोपण, मंत्रलेखन पर्व का आमंत्रण और २०० घंटे की अखंड धून । (३) कुणपुर : र दिवस ग्राम सभा, वृक्षारोपण, मंत्रलेखन, ग्राम सफाई, व्यसन मुक्ति अभियान ।(४) श्रीजीनगर : २०० घंटे की धून, ग्राम सफाई, सत्संग सभा । (५) नाना उभडा : जलझीलनी एकादशी नगर यात्रा, पधरामणी द्वारा आमंत्रण, व्यसन मुक्ति अभियान, ३ दिवसीय ग्राम सभा ।(६)शेर : २ दिवसीय ग्राम सभा, २०० घंटे धून, वृक्षारोपण, पधरामणी द्वारा पर्व के लिये आमंत्रण और व्यसन मुक्ति अभियान । (७) मोटा उभडा : ग्राम सभा, २०० घंटे की धून, मंत्रलेखन, पधरामणी, वृक्षारोपण ।(८) ट्रेन्ट : ग्राम सभा, २०० घंटे की धून, रुद्रयज्ञ, महामंत्रलेखन और युवा सभा । (९) डेडियासण : २ दिवस ग्राम सभा, २०० घंटे की धून, वृक्षारोपण, मंत्रलेखन, व्यसन मुक्ति अभियान । (१०) पाटडी : ग्राम सभा, युवा सभा, मंत्रलेखन, वृक्षारोपण, बहनो के मंदिर में २०० घंटे की धून, व्यसन मुक्ति अभइयान, पधरामणी, पर्व का आमंत्रण । (११) बामणवा : ग्राम सभा, मंत्र लेखन, वृक्षारोपण, २०० घंटे की धून, व्यसन मुक्ति, पधरामणी, स्वच्छता अभियान । (१२) जरवल्ला : ग्राम सभा, मंत्रलेखन, युवा सभा, पंचदिन का यज्ञ, स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित पुरुषोतमप्रकाश कथा, पधरामणी २०० घंटे की धून (दनो मंदिरो में)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा "पर्व" के उपलक्ष्य में स्वामिनारायण म्युजियम में अखंड धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की द्विशताब्दी पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ता. ५-९-२१ रविवार के दिन दोपहर १ बजे से शायं ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून अ.नि. प.भ. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल ।ह. प.भ. वेणुगोपाल, प.भ. श्री धीरुभाई नारणभाी और प्रदिपाबेन नारणभाई पटेल यजमान ने किया था । पुरा हाल संत-हरिभक्तो से भर गया था । धून के अंत में प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, अ.नि. प.भ. हितेन्द्रभी के गुणाका वर्णन करके अन्तःकरण से खुश हुए ।(शा. धर्मनंदनदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा टोरडा धाम में अखंड धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से मू.अ.मू. स.गु. गोपालानंद स्वामी की जन्मभूमि तीर्थ टोरडाधाम को ता. १२-९-२१ से रविवार के दिन प्रातः ६ से १२ बजे तक पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून की गई थी । जिसके यजमान प.भ. श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल परिवार (जमीयतपुरावेल) थे ।१० बस और प्राईवेट वाहन द्वारा १००० जितने हरिभक्त संत गये थे ।(पूर्णस्वरुप स्वामी - नारणपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा "पर्व" के उपलक्ष्य में मूलीधाम में अखंड धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अपने श्री नरनारायणधेव भगवान के २०० वे पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में झालावाड की महान तीर्थ भूमि मूलीधाम में परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव के सानिध्य में ता. २६-९-२१ रविवार के दिन ६ से १२ बजे तक अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून उल्लास से की गयी । जिसके यजमान अ.नि.प.भ. लवजीभाई भीमदास पटेल परिवार के प.भ. लालजीभाई लवजीभाई पटेल परिवार (देवपुरावाले) अहमदाबाद थे । नारणपुरा से १२ बस और प्रयवेस वाहनो द्वारा तथा झालावाड के हजारो हरिभक्त धूनमें भाग लिये थे । मूली मंदिर के महंत स्वामी

हरिप्रकाशदासजी आदि संतोने सुंदर सहयोग मिला था । (को.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी – नारणपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गामठी पाटोत्सव

महाप्रतापी संकल्प सिद्धकर्ता परमकृपालु श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गामठी (भाई-बहन) के वार्षिक पाटोत्सव ता. १९-९-२१ रविवार के दिन मनाया गया था ।

इस अवसर पर प्रातः ८ बजे महापूजा, पू. संतो द्वारा ठाकरुजी का अभिषेक, अन्नकूट किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर, कांकरिया, नारणपुरा, हिम्मतनगर आदि धाम से संत आये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. अशोकभाई शंभूभाई पटेल का परिवार था । सभी ग्रामवासीयो ने लाभ उठाया था ।(को. मिलुतभाी पटेल – गामडी)

गामडी श्री स्वामिनारायण मंदिर में कोरोना काल में अक्षरनिवासी हरिभक्तो की याद में 'पर्व' के निमित महामंत्र धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से जेतलपुरधाम निवसी महामप्रतापी श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के गामडी गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और महंत श्री के.पी. स्वामी की प्रेरणा अनुसार श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी में ता. १२-९-२१ रविवार के दिन शायं ४ से ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून कोरोना काल में अक्षरनिवासी हरिभक्तो के कल्याण हेतु 'पर्व' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में हुआ था ।इस अवसर पर नारणपुरा, जेतलपुर, कांकरियाँ आदि मंदिर के पूज्य मंहत स्वामी और संत मंडलने सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये ।(को. धर्मनंदन स्वामी – जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यू दिल्ली का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी अनिरुद्धचरणदासजी गुरु कोठारी स्वामी कृष्णसेवादासजी और पार्षद चंदु भगत गुरु स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी (मूली), की प्रेरणा से तथा मुंबई निवासी अ.नि.प.भ. अनंतरायभाई धोलकिया तथा उनके पुत्र प.भ. हिमांशुभाई अनंतरायभाई धोलकिया तथा उनकी पुत्री हर्षाबेन पंकजभाई यजमान पद से बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव ता. १५-८-२१ (श्रावण सुद-८ के बदले) रविवार के दिन उल्लासपूर्वक संपन्न हुए । ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट, महापूजा आदि पूर्ण की गयी । नये महंत स्वामी योगीचरण स्वामी और अन्य आये संत यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये ।(पार्षद चंदु भगत – मूली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में "पर्व" महामहोत्सव के उपलक्ष्य में २०० धंटे की धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा जेतलपुर और नारणपुरा मंदिर के महंतश्री पू. स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में अपने 'पर्व' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में सभी भाई-बहन साथ रहकर २०० घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून किये थे । ता. २६-८-२१ को सायं पूर्णाहुति के समय नारणपुरा मंदिर से पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ आकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

"पर्व" महोत्सव के उपलक्ष्य में साबरमती (रामनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में २०० घंटे की धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के 'पर्व' महोत्सव के निमित्त समस्त महिला मंडल की बहनो ने २०० घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की थी । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के साथ सांख्ययोगी बहने आकर सबको कृतार्थ की थी । प.पू. गादीवालाश्री ठाकुरजी की आरती करके धून की पूर्णाहुति किये ।इस अवसर पर झूंडाल, अंबापुर और मोटेरा की बहने दर्शन का लाभ लिये ।(नयनाबेन पटेल – साबरमती)

गांधीनगर से-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर के "पर्व" निमित्त धून सप्ताह

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिरमें बिराजमान श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी ''पर्व''

के उपलक्ष्य में गांधीनगर से-२३ के अपने स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशईर्वाद से विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था । जिसके अन्तर्गत श्रावण मास में श्रीमद् भागवत कथा सत्संग तथा एकादशी समूह महापूजा उसी प्रकार ३१-८-२१ से ६-९-२१ तक धून सप्ताह समारोह मनाया गया । जिससे अधिक संख्या में हरिभक्त आये थे । धून की पूर्णाहुति में शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी सभी भक्तो को ''पर्व'' महामहोत्सव में तन, मन, धन से सेवा में सहभागी बनने का अनुरोध कीये ।(नारायण वी. जानी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर और गामडा के "पर्व" महोत्सव के उपलक्ष्य में धून सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में हिम्मतनगर मंदिर द्वारा अनेक कार्यक्रम किये गये थे।

ता. ४-८-२१ एकादशी की रात्रि में संतो द्वारा सत्संग सभा में ''पर्व'' के विषय में बताया गया था।

इलोल गाँव में संत-हरिभक्त एक घंटे महामंत्र धून किया गया था । ता. ६-८-२१ के सत्संग में संतो ने ''पर्व'' की सूचना दिये थे । ता. १५-८-२१ को हिम्मतनगर द्वारा अपने मंदिरो की पदयात्रा प्रवास किये थे।

ता. १८-८-२१ से ता. २०-८-२१ के मध्य प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से त्रिदिवसीय महिला कथा सांख्ययोगी बहनोने किया था । हिंडोला का अलौकिक दर्शन भी कराया गया था । ता. ३०-८-२१ से ५-९-२१ तक पंच दिनात्मक भागवत कथा की गई थी । ता. ४-९-२१ अरोडा गाँव में सत्संग सभा की गई थी।

ता. ५-९-२१ के दिन श्री स्वामिनारायण म्युजियम में समूह महापूजा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । कुल ५१ पाटले द्वारा हरिभक्तो ने महापूजा में भाग लिये थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को दर्शन दिये थे।

ता. १०-९-२१ के दिन गणपतिजी का पूजन आरती संत हरिभक्तने किये थे । राधाष्टमी कठिन घनश्याम महिला मंडल की बहनो द्वारा भजन किया गया था ।(विपुल भगत)

श्री नरनारायणदेव के २०० वे "पर्व" महोत्सव के उपलक्ष्य में गाँव-गाँव में सत्संग प्रचार

विहार, वजापुर, भाणपुर, विजापुर, हाथीपुरा, रणछोडपुरा, सांकापुरा, जेपुर, धनसुरा, रामपुरा, बिलोदरा, अहमदाबाद में चांदलोडिया, शाहपुर, शीलज, आर.सी. टेकनिकल, घाटलोडिया, नया चिलोडा, गोमतीपुर, अम्बावाडी, पालडी, जीवराजपार्क, मेमनगर, मणीनगर, हाथीजण सर्कल, नया राणीप, मानव मंदिर, धरणीधर, बापुनगर, खंडेरावपुरा, अंकुर वृद्धाश्रम टिफइन सेवा, महापूजा सभा, जनमंगल पाठ, अखंड धून, आदि प्रवृत्ति कालुपुर मदंर के पूजारी स्वामी कुंजविहारीदासजी और संत मंडल द्वारा की गई । (पूजारी स्वामी - अक्षरभुवन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के संतो स्वामी केशवचरणदासजी और स्वामी घनश्यामदासजी चार्तुमास में कथा करने आये थे । गाँव के सभी भक्त कथा-वार्ता के साथ आगामी अपने पर्व महोत्सव में सभी तन, मन, धन से सेवा करने की सलाह दी है । (श्रीन.ना.देव युवक मंडल - लवारपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के दहेगाम में कालुपुर के संत स्वा. केशवचरणादसजी और स्वामी घनश्यामदासजीने चार्तुमास में पाठ किये थे । हरिभक्तो को लाभ पहुंचाये । तथा 'पर्व' के विषय में भी बताये थे । दहेगाम मंदिर में जन्माष्टमी की रात में श्री कृष्णजन्म उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । (कोटारीश्री दहेगाम)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) द्वारा पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में निम्नलिखित गाँवो में किये गये सत्संग के क्रिया कलाप

(१) ता. १५-८-२१ गांधीनगर देव स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी द्वारा सत्संग सभा । (२) ता. १७-८-२१ आजोज गाँव में शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी सत्संग सभा में आये थे । (३) ता. १८-८-२१ खेरोल गाँव में सत्संग सभा में पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामीने लाभ दिया था । (४) ता. २१-८-२१ समौ गाँव में पी.पी. स्वामी और शा. राम स्वामीने सत्संग सभा में कथा-वार्ता किये थे । (५) ता. २२-८-२१ मुबारकपुरा गाँव में शा. पी.पी.

स्वामी, घनश्याम स्वामी ने कथा-वार्ता किये ।(६) ता. ३०-८-२१ न्यु राणीप मंदिर पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामीने कथा-वार्ता का लाभ दिये ।(७) ता. ३१-८-२१ मुक्तिधाम में शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामीने सत्संग का लाभ दिये ।(८) ता. २-९-२१ शिलज में शा. पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामीने लाभ दिया ।(९) ता. ३-९-२१ अडालज वावोल गाँव और धरमपुर गाँव में पी.पी. स्वामी और राम स्वामीने सत्संग सभा किये ।(१०) ता. ५-९-२१ खोरजगाँव में पी.पी. स्वामी और राम स्वामीने सत्संग सभा किये थे ।(११) ता. ६-९-२१ मीठाखली अहमदाबाद मंदिर में पी.पी. स्वामी, घनश्याम स्वामीने कथा-वार्ता किये ।(१२) ता. ७-९-२१ महादेवनगर मंदिर में पी.पी. स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामीने सत्संग सभा किये । (१३) ता. ९-९-२१ मेमनगर मंदिर में उपरोक्त संत मंडल कथा-वार्ता का लाभ दिये ।(१४) ता. ११-९-२१ बापुनगर में पी.पी. स्वामी और जनकभाई ने सत्संग का सुंदर लाभ दिये थे ।(देव स्वामी - गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ में ता. ५-९-२१ को स.गु. गोपालानंद स्वामी रचित महापूजा का आयोजन पूर्ण हुआ । जिस में ७५ परिवार के लोगोने लाभ लीया था । प्रियांक महाराजने विधिवत महापूजा किये थे । पूर्णाहुति की आरती में महंत स्वामी पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, देव स्वामी, आदि संत रहकर सभी को आशीर्वाद दिय थे । घनश्याम स्वामी के मार्गदर्शन में युवक मंडल ने अच्छी व्यवस्था की थी । अंत में सभी को प्रसाद खिलाया गया था ।(विपीन एम. पटेल)

श्री नरनारायणदेव के २०० वे पर्व महोत्सव के निमित्ते परमपूज्य १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से पर्व महोत्सव के अध्यक्ष परमपूज्य लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और परम पूजय बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायणमंदिर से-२ गांधीनर में पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में गणेश महोत्सव जलजीलनी एकादशी ता. १०-९-२१ से १७-९-२१ तक महंत स्वामी पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में श्री रमणभाई गोविंदभाई और मुकेशभाई ईश्वरभाई पटेल (वावोल) के यजमान पद से उल्लासपूर्वक मनाया गया था । प्रातः प्रतिदिन अलग-अलग हरिभक्त गणेश पूजन का लाभ लिये ।(साधु देवप्रकाश स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा (हलवद रोड)

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (धांगधा) हलवद रोड में ठाकुरजी का कलात्मक हिंडोला बनाया गया था । सांख्ययोगी कंचनबा आदि ने सुंदर सत्संग का आयोजन किये थे । (अनिल दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से कारोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपने पर्व महा उत्सव के उपलक्ष्य में शायं ४ से ६ श्रावण मास में श्रीमद् भागवत कथा की गई । कथा के बाद कीर्तन-धून किया गया था । श्री कृष्ण जन्मोत्सव भी मनाया गया था । सभी गाँव के हरिभक्त लाभ लिये थे ।(कोठारी श्री नरेन्द्रभाई)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (ओस्ट्रेलिया)

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी ब्लेकटाउन ISSO में बाल सभा में बालकोने श्रीकृष्ण भगवान के जन्मोत्सव पर बर्थ-डे कार्ड घर पर तैयार करके Online माध्यम से तैयार किये थे ।

सिडनी में Covid-19 के बढते केस के कारण दो महीने तक लाक-डाउन चालू था । इस कारण से मंदिर में जन्माष्टमी मनाना कठिन था ।

लेकिन बाल सभा के बच्चे, उनके माता-पिता तथा शिक्षको के सहयोग से बच्चे अपने घर घर रहकर बर्थ-डे कार्ड तैयार करके संदेश लिखे थे । बालको का श्रीजी के प्रति लगाव प्रेम, प्रार्थना इस कार्ड में देख सकते है । रविवार को शायं होने वाली Online सभा में सभी बच्चे और हरिभक्त उत्सव को मनाये थे ।

Online कथा द्वारा सिडनी के हरिभक्तो को कथा-वार्ता लाभ जेतलपुरधाम के महंत श्री बड़े पी.पी. स्वामी तथा धर्मनंदन स्वामी दिये थे । बच्चो तथा हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।(प्रितेश केशव - सिडनी)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

श्रावण सुद-१ अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. लालजी हरजीभाई पटेल (सामत्रा-कच्छ), प.भ. पटेल रमेशचंद्र शामजीभाई (नडीयाद), श्रीहरि ज्वेलर्स (सरसपुर). **श्रावण सुद-२** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. रमणीकभाई परसोतमभाई केरीयाचार, **श्रावण सुद-३** अ.नि. हिरजी करशन वरसाणी (सुखपर-कच्छ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. रावजीभाई चिमनभाई पटेल (धमासणा). **श्रावण सुद-४** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जीतुभाई लक्ष्मीनारायण दवे (अमदावाद), अ.नि. देवकीबेन केसराभाई भगत (रवापर-कच्छ), प.भ. भीमजीभाई परिवार (भुज-कच्छ), प.भ. राजेशभाई जादव (पोरबंदर), प.भ. प्रविणभाई पटेल (लींबडी), अ.नि. मेधजीभाई लालजीभाई वेकरीया (मांडवी-कच्छ). **श्रावण सुद-५** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. रमेशभाई अंबालाल पटेल (धमासणा), प.भ. यश्वी विकीर पटेल (अमदावाद). **श्रावण सुद-६** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. परेशभाई द्वारकादास पटेल (उंझा), अ.नि. रामजी प्रेमजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. रमणीकभाई के. पटेल (राजपुर), प.भ. हिरल रितेश पटेल (अमदावाद). **श्रावण सुद-७** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. पटेल केशवलाल हरगोवनदास पटेल (मोटेरा), प.भ. बिहोला चंदुजी प्रतापजी (पालज), डॉ. खुश कल्पेशभाई पटेल (जमीयतपुरा), प.भ. घनश्यामभाई गज्जर (अमदावाद), अ.नि. ठाकोरभाई नटवरलाल झिंझुवाडिया (अमदावाद), प.भ. भावसार मितेषभाई हसमुखभाई (अमदावाद), प.भ. पटेल राजेशभाई धनजीभाई (नरोडा), अ.नि. धनश्यामभाई चिनुभाई (अमदावाद), प.भ. गीरीशचंद्र श्रीवास्तव (अमदावाद), प.भ. मकाणी मंगलाबेन शांतिलाल (राणपुर), ग.स्व. गुणवंतीबेन ईश्वरलाल (अमदावाद), अ.नि. वेलजीभाई टपुभाई टांक (जीरागढ). **श्रावण सुद-८/९** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. किशोरभाई लालजीभाई केराई (मिरजापुर-कच्छ), अ.नि. पटेल गोकळदास गोबरदास (बायड), प.भ. पटेल शारदाबेन जयंतीभाई (पोर-गांधीनगर), अ.नि. सुमनभाई रावजीभाई पटेल (पोर-गांधीनगर), अ.नि. धनबाई विश्राम गाजपरीया (पीयावा-मांडवी-कच्छ). **श्रावण सुद-११** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. काशीबेन केशवलाल पटेल (उनावा), प.भ. शांतिलाल परसोतमभाई (राणीया), अ.नि. विमळाबेन कचराभाई पटेल (कणभा), प.भ. चौहाण अमरीष सूर्यकांत (मुंबई). **श्रावण सुद-११** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. शांताबेन शिवरामभाई पटेल (पाटण), अ.नि. विठ्ठलदास प्रेमचंद भावसार (अमदावाद), श्री धर्मदेव अनिलकुमार देसाई (अमदावाद), प.भ. नटवरभाई चिमनभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. वैभवीबेन मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. झाला रणजीतसिंह जवानसिंह (सीतापुर), सहजानंद कन्स्ट्रकशन कुं. मावजीभाई (कच्छ). **श्रावण सुद-१२** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लालजी करशन हिराणी (मेघपर-कच्छ), प.भ. पटेल जगदीशभाई चिमनभाई (गांधीनगर), प.भ. काशीबेन केशवलाल (उनावा), प.भ. पटेल रमाबेन (नरोडा), प.भ. दर्शनभाई एम. पाठक (अमदावाद), अ.नि. अंबाबेन धरमशीभाई सीटा (सुरत), प.भ. धर्म बिंदेश पटेल, कियन बिंदेश पटेल (गांधीनगर), प.भ. अरविंदभाई मावजीभाई वेकरीया (मिरजापर-कच्छ), अ.नि. गीरीशभाई रावजीभाई (अमदावाद), प.भ. गीताबेन नवीनभाई (साबरमती). **श्रावण सुद-१३** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जीतभाई पूजारा (अमदावाद), प.भ. हिरालाल कानजी डबासीया (मिरजापर-कच्छ), प.भ. गज्जर वर्षाबेन मनोजभाई (प्रांतिज), प.भ. पटेल जयेशभाई रणछोडभाई (संतरामपुर), प.भ. गोमतीबेन रणछोडभाई (राणीप), अ.नि. विश्राम करशन वेकरीया (मांडवी-कच्छ), अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), स.गु. स्वामी भगवतजीवनदासजी (जूनागढ). **श्रावण सुद-१४** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. नंदुभाई नारणभाई पटेल (उनावा), प.भ. जोईतारामभाई रायचंददास पटेल (भाउपुरा), अ.नि. अरूणसिंह चंदुजी खेर (सोजा), अ.नि. जयंतिलाल नटवरलाल सोनी (नारणपुरा), अ.नि. विश्राम करशन वेकरीया (मांडवी-कच्छ), अ.नि. विश्राम करशन वेकरीया (मांडवी-कच्छ), पभ. विजयभाई घनश्यामभाई पटेल (गोधरा), प.भ. पटेल विष्णुभाई ईश्वरदास (करजीसण), प.भ. गंगाबेन अंबालाल पटेल (गांधीनगर). **श्रावण सुद-१५** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. केनी प्रतिकभाई पटेल (अमदावाद), अ.नि. रतनबेन लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. लालजी मनजी गाजपरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. पटेल शशीकांतभाई कालीदास (अमदावाद), अ.नि. शांतिलाल खीमजीभाई चौहाण (नडीयाद).

श्रावण वद-१ अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. भीखाभाई गेलाणी (सुरत), प.भ. पटेल संध्याबेन दिपककुमार (उंझा), अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. जसुबेन मनजी खेताणी (फोटडी-कच्छ). **श्रावण वद-२** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल

(गांधीनगर), अ.नि. काळा हसमुख जादवा (रामपर-कच्छ). **श्रावण वद-३** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. वालबाई कानबाई केराई (मांडवी-कच्छ), प.भ. सुरेशभाई परसोतमदास (उंझा), प.भ. बळदेवभाई पटेल (देउसणा), प.भ. पटेल शारदाबेन नटवरभाई (वावोल), अ.नि.स.गु. शा. स्वामी भक्तिवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वा. कृष्णाचरणदासजी (जेतलपुर). **श्रावण वद-४** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. पटेल गंगारामभाई महादेवभाई (मेमनगर), अ.नि. खीमजीभाई मावजीभाई चौहाण (नडीयाद), प.भ. पटेल केतनभाई दशरथभाई (अमेरिका). **श्रावण वद-५** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जीतेन्द्र मोहनलाल वरसाणी (भारासर-कच्छ), अ.नि. धनबाई वेलजीभाई भुडीया (सुखपर-कच्छ). **श्रावण वद-६** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. स.गु.शा. स्वा. भक्तिवल्लभदासजी (कालुपुर), प.भ. रविन्द्र जैनकुमार कवि (अमदावाद). **श्रावण वद-७** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), कुंदनबा वसंतराय जगडा (अमदावाद), अ.नि. पटेल जेशंगभाई कसनाभाई (बायड), प.भ. मगनभाई मोहनभाई वेकरीया (अमदावाद), प.भ. महेन्द्रभाई पाटडीया (राजकोट), अ.नि. किशनभाई मोदी (नरोडा), प.भ. चौधरी मणीबेन वेलाभाई तथा चौधरी रमीलाबेन (बापुपुरा). **श्रावण वद-७** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. पटेल पल्लवीबेन परेशकुमार (अमदावाद), प.भ. रूद्र आशिषभाई भावसार (सरसपुर). **श्रावण वद-९** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. शितलबेन योगीकुमार विष्णुलाल (कडी), प.भ. प्रेमजीभाई कानजीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. पटेल सूर्याबेन भरतकुमार (राणीप), डॉ. रूषिराज देवेन्द्रभाई डोडीया (बोपल), अ.नि. मुकेशभाई कानभाई (मोखासण), प.भ. पथाभाई मलुभाई मोरी (कालीयाणा), प.भ. आरव मेहुलकुमार शियाणी (सुरत), प.भ. मंगळाबेन चंदुलाल पटेल (सोजा), प.भ. रसिकभाई फुलाभाई पटेल (कपडवंज), प.भ. विजयभाई ईश्वरभाई, पुष्पाबेन (कुबडथल), प.भ. पटेल जयाबेन त्रिभोवनभाई (लखतर), प.भ. शांताबेन हरिभाई (पोर), अ.नि. जसवंतलाल कालीदास झवेरी (राजकोट), प.भ. पटेल सकरीबेन सांकळचंदरामदास पटेल (मारूसणा). **श्रावण वद-१०** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. आध्याबेन केयुरभाई कोटडीया (अमदावाद). **श्रावण वद-१०** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. विश्रामभाई अरजण हिराणी (सरली-कच्छ). **श्रावण वद-११** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. सुरेशभाई हरिभाई पटेल (उंझा), प.भ. रिध्धि आविश भावसार (सरसपुर). **श्रावण वद-१२** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. भरतकुमार शंभुदास गज्जर (अमदावाद), प.भ. राकेशभाई चिमनभाई पटेल (बायड), प.भ. हसमुखभाई केशवलाल पटेल, प.भ. शर्मिष्ठाबेन नीलकंठभाई पटेल (वडोदरा), प.भ. डाह्याभाई नारणभाई पटेल (माणसा), प.भ. पटेल जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. धर्म बिंदेशभाई पटेल तथा कियान बिंदेशभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. भरतभाई जगजीवनदास गज्जर (अमदावाद), प.भ. कानबाई जीणा नारण गोरसीया (सुखपर-कच्छ), अ.नि. जमनाबेन परसोतमभाई पटेल (जानवड). **श्रावण वद-१३** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. नर्मदाबेन कानजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ. हिराबेन शकरभाई पटेल (डिंगुचा), प.भ. मुकेशभाई ईश्वरभाई पटेल (वावोल), प.भ. पटेल शकरीबेन कनैयालाल (मारूसणा), प.भ. जयंतिभाई मथुरदास पटेल (वडु), प.भ. शांताबेन भाईलालभाई पटेल (साबरमती), प.भ. सतीषभाई कांतिलाल (सरसाव), प.भ. बाबुलाल मणीलाल पटेल (वडु), श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ (झुंडाल), प.भ. पटेल पियुष रामाभाई (सूकाटींबा), प.भ. कांताबेन जीवणलाल (अमदावाद), अ.नि. लक्ष्मीबेन लालजीभाई (सुरज), अ.नि. कंकुबेन मणीलाल मोतीभाई पटेल (मालवण), प.भ. माणेकलाल के. पटेल (अमदावाद), अ.नि. शंभुभाई भीखाभाई त्रामसीया (अमदावाद). **श्रावण वद-१४** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. परेशकुमार डाह्यालाल पटेल (अमदावाद), अ.नि. शारदाबेन भलाभाई पटेल (पोर), प.भ. कनुभाई सोमदास पटेल (करजीसण), अ.नि. मेघजी लक्ष्मण हिराणी (पीयावा मांडवी-कच्छ), अ.नि. मेघजी लक्ष्मण हिराणी (पीयावा मांडवी-कच्छ), अ.नि. मेघजी लक्ष्मण हिराणी (पीयावा मांडवी-कच्छ), अ.नि. नाथा शामजी वेकरीया (पीयावा मांडवी-कच्छ), अ.नि. प्रेमबाई प्रेमजी हिराणी (पीयावा मांडवी-कच्छ), अ.नि. विमळाबेन सुरेशभाई वघासीया (सुरत), प.भ. पटेल विकाशकुमार जयंतीभाई (साचोदर). **श्रावण वद-३०** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. आशिषभाई त्रिवेदी (हैद्राबाद), अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (सरसपुर), अ.नि. पटेल भीखीबेन रणछोडभाई (आकरूंद), अ.नि. हिराभाई लवजीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. कुंदन प्रकाशभाई मोदी (अडालज), प.भ. हिराणी अरजण नारायण (मांडवी-कच्छ), प.भ. पुरुषोत्तम वेलजी राबडीया (सुखपर-कच्छ).

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

कलोल पंचवटी में पर्व के निमित कथा में आशीर्वाद देते हुए और वृक्षारोपण करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया में निर्माणाधिन संकुल के कार्य का अवलोकन
और मार्गदर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

नवनियुक्त मुख्यमंत्रीश्री धर्मकुल के निवास स्थान पर शुभेच्छा मुलाकात के लिये।

जलझीलनी एकादशी को अपने हाथो द्वारा प्रसाद देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
http://www.swaminarayan.in/donation

Prafull Kharsani